अब भूकंप के झटके भी सह लेंगे बांध!

कानपुर, 3 मार्च। डिजाइन व नयी तकनीक के इस्तेमाल से बांध की उम्र बढ़ायी जा सकती है। बांध तकनीकि के क्षेत्र में भारत में कुछ खास नहीं हुआ है जबकि यहां पर कंक्रीट व मिट्टी गारे के बने सैकड़ों बांध हैं। इन बांधों का विश्लेषण करने व नयी तकनीक का प्रयोग करने में काफी पैसा व्यय होगा। यह

लेकिन बहुत महंगी हैं नई तकनीक

आईआईटी के संक्षिप्त शिक्षा पाठ्यक्रम में जुटे दिग्गज

बातें आईआईटी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के कंक्रीट डेम विषय पर आयोजित संक्षिप्त पाठ्यक्रम में केलीफोर्निया बर्कले विश्वविद्यालय से आये प्रो. ए.के. चोपड़ा ने कही। आईआईटी में संक्षिप्त शिक्षा पाठ्यक्रम का शुभारंभ प्रो. चोपड़ा ने दीप जलाकर किया। उन्होंने कहा कि पुणे के कोयना बांध १९६७ में भूकंप की वजह से प्रभावित हुआ था, जिस पर काफी काम हुआ लेकिन नयी तकनीकि का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है। सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. सुधीर कुमार जैन ने बताया कि कंक्रीट के बांधों का विश्लेषण कराया जाय तो काफी फायदा हो सकता है। उन्होने कहा कि नयी तकनीक काफी मंहगी साबित होगी। अब ऐसी डिजाइन विकसित कर ली गयी है जो कि भूकंप के झटकों को सहन कर सकेंगी। इस मौके पर सिविल इंजीनियरिंग विभाग के मुखिया प्रो. ओंकार दीक्षित ने आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए आभार जताया। कार्यक्रम में अमेरिका से आये लैरी के नस, दुर्गेश राय, सुरेश अहलावादी आदि थे।

कार्यक्रम का दीप जलाकर उद्घाटन करते प्रो. ए. के. चोपड़ा। 04/03/09 छाया : आज